बनास जन

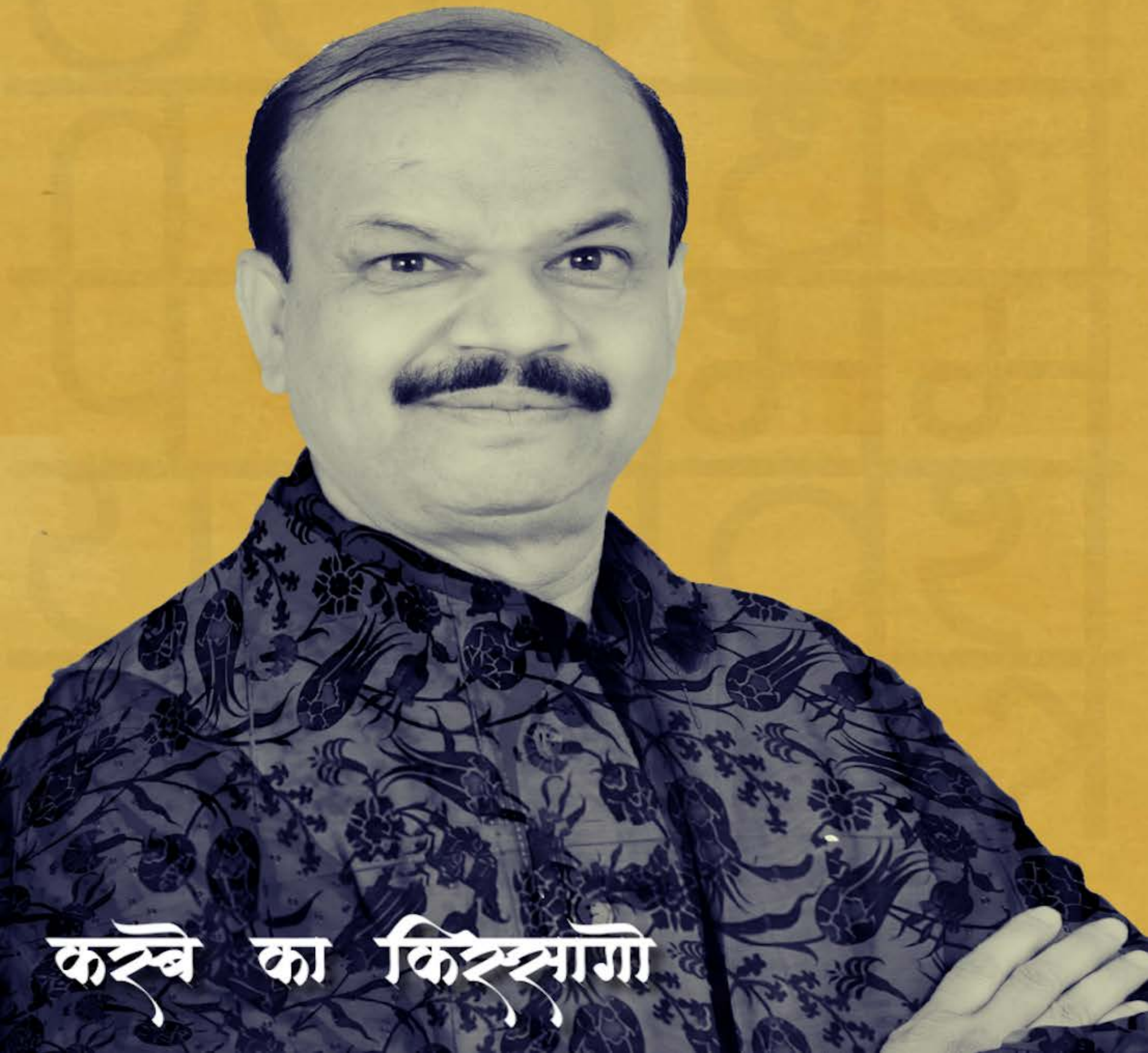

कस्बे का किस्सागो

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

कस्बे का किस्सागो

(कहानीकार पंकज मित्र पर केंद्रित अंक)

इस अंक के संपादक

राजीव कुमार

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

सहयोग राशि : 125 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–165 रुपये
250 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–290 रुपये
7000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
12,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सएप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और सचदेवा आफसेट प्रिंटर्स, बी-39, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात 4

संस्मरण

इस तबस्सुम में कहीं तंज़ के नश्तर तो नहीं.... — संजय कुमार कुंदन 10

'हुड़ुकलुल्लु' के 'अच्छा आदमी' — राजेश करमहे 15

परख

त्रासद स्थितियों के बावजूद जीवनराग — कमलानंद झा 23
('बाशिंदा@तीसरी दुनिया' कहानी-संग्रह पर केन्द्रित)

भूमण्डलीकृत बाजारवादी व्यवस्था और पंकज मित्र की कहानियाँ — रामकली सर्राफ 30

बड़े परिप्रेक्ष्य के रचनाकार — अजय वर्मा 40

व्यवस्था के सेंदरा में 'जिद्दी रेडियो' — प्रियम अंकित 49
('जिद्दी रेडियो' कहानी-संग्रह पर केन्द्रित)

कहानी

पसमांदा — पंकज मित्र 63

मूल्यांकन

पुनर्रचना के आईने में — राकेश बिहारी 75

बाजार का मायाजाल — मनोज कुमार पांडेय 87

सचेत और सरोकारी किस्सागो — आशुतोष 94

साक्षात्कार

इस छली समय में आदर्शों की स्थापना अब स्वप्न ही है 101
(पंकज मित्र से राजीव कुमार की बातचीत)

लेख

पंकज मित्र की कहानियों में समकालीन यथार्थ — जिंदर सिंह मुण्डा 119

वैश्वीकरण और बाजारवाद के दौर में — एकता मंडल 126
('हुड़ुकलुल्लु' कहानी-संग्रह पर केन्द्रित)

आधुनिक समय की 'पड़ताल' — श्रुति कुमुद 137
('क्विजमास्स्टर' कहानी-संग्रह पर केन्द्रित)

कहानियों का प्रकाशन-समय 142

जीवन का कैलिडोस्कोप 144

अपनी बात

हिन्दी कहानी में पंकज मित्र का आगमन बीते सदी के अंतिम दशक में हुआ। इनकी प्रथम कहानी 'अपेंडिसाइटिस' 'हंस' में सितम्बर 1996 में प्रकाशित हुई थी। तब से लेकर अब तक वे कहानी लेखन में निरंतर सक्रिय हैं तथा इस दौर के तमाम विषयों पर रचनात्मक हस्तक्षेप करते रहे हैं। पंकज मित्र जब लेखन में सक्रिय हुए उदय प्रकाश, अखिलेश, प्रियंवद, संजीव आदि की पीढ़ी अपनी-अपनी रचनात्मकता के उरोज पर थे। इन सबके साथ ही पंकज मित्र की संवेदना एवं सरोकार की एकता रही और पंकज मित्र, अल्पना मिश्र, प्रेमरंजन अनिमेष, गौरीनाथ, बसंत त्रिपाठी, कविता, मनीषा कुलश्रेष्ठ, रवि बुले, प्रभात रंजन, नीलाक्षी सिंह आदि की पीढ़ी बनी। जिसके तुरंत बाद ही, 2004 के आसपास चंदन पांडेय, मो. आरिफ, मनोज पांडेय, कुणाल सिंह, राकेश मिश्र आदि की पीढ़ी आई। पंकज मित्र से लेकर चंदन पांडेय आदि के बीच समय का अंतर काफी कम था, आगे चलकर सबके एक दौर के कहानीकार होने का अहसास बना। तो एक तरह से पंकज मित्र से प्रस्थान माना जा सकता है (माना ही जाए ऐसा कोई आग्रह नहीं है)। 1997 के 'इंडिया टुडे' वार्षिकी में छपी 'पड़ताल' शीर्षक कहानी से पंकज मित्र कहानी के परिदृश्य पर महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर बन गए। इसी कहानी को 'इंडिया टुडे साहित्य वार्षिकी' तथा 'हंस'--दोनों पत्रिकाओं ने पुरस्कृत किया था। भूमंडलीकरण की घटनाओं को केंद्र में रखकर लिखी गयी यह कहानी रचनात्मक स्तर पर ताजगी लिये हुए किसी संवदेनशील नौजवान की 'फर्स्ट हैंड एक्सपीरीएंस' की तरह थी। उषा प्रियंवदा की 'वापसी' के बाद पंकज मित्र की 'पड़ताल' उन सबसे महत्त्वपूर्ण कहानियों में से एक थी जिसने दिखलाया कि व्यक्ति की असीम लालसा एवं मतलबपरस्ती ने मानवीय संबंध को तार-तार कर दिया है। 'वापसी' में जहाँ जगदम्बा बाबू घर से पुनः प्रस्थान करने को विवश हैं या कहें कि मौन रूप से उन्हें वापस घर से बाहर धकेल दिया जाता है, 'पड़ताल' में इसका अवसर भी नहीं बनता। किशोरी रमण बाबू उस परिवार के द्वारा, जिसे उन्होंने अपनाया, संरक्षण दिया, उसी परिवार का हर सदस्य उन्हें मृत्यु तक पहुँचा देने में अपनी-अपनी भूमिका अदा कर रहा है। देश की स्वतंत्रता के साथ जो पूँजीवाद आया उसने भी पारिवारिक-सामाजिक सम्बन्धों के ढाँचे को प्रभावित किया था। लेकिन भूमण्डलीकरण के साथ, नब्बे के दशक में आया पूँजीवाद का नया संस्करण कहीं ज्यादा उग्र, कठोर एवं मारक है। तब (स्वातंत्र्योत्तर दौर पूँजी से प्रभाव से) सम्बन्धों में तनाव आया था लेकिन अब मानवीय सम्बन्ध पूरी तरह संकटग्रस्त हो गया है। लालसा का स्वर्गग्रासी विस्तार है, सम्बन्धों से गरिमा एवं परस्परता की विदाई हो गयी है। जब जो लगाव था उसमें विचारों की भिन्नता, कसमकस के बावजूद लोगों में सम्बन्धों की परवाह थी; अब वह परवाह नदारस है। पंकज मित्र ने इस बारीकी वाली कुटिलता को शुरू में ही पहचान लिया था। एक युवा कहानीकार के तौर पर ही उनकी इस पहचान क्षमता ने उनमें निहित असीम संभावना का संकेत किया था। जिसे उन्होंने अपने कहानी लेखन की निरंतरता, विषय चयन की व्यापकता, विषय के अंदर तक पहुँचने की क्षमता से साबित किया।

यह दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा कि विभिन्न तरह की जो सत्ता संरचनाएँ हैं--वह चाहे धर्म हो या

राजनीति, प्रशासन तंत्र हो अथवा सांस्कृतिक-सामाजिक-पारिवारिक तंत्र--उसने मनुष्य के साथ ज्यादा छल ही किया है। पंकज मित्र ने अपनी कहानियों में इन छलों की व्यापक-व्याप्ति को उद्घाटित किया। इसीलिए पंकज मित्र की कहानियों में अंततः एक तिक्त एहसास शेष रह जाता है। युवाओं के सामने रोजगार के अवसर नहीं है, प्रेम के लिए स्पेस संकुचित हो रहा है। परिवार में बिखराव है। समाज कोई संबल नहीं देता। हाशिए के लोग (विशेषकर आदिवासी समाज) ठगे-लूटे जा रहे हैं। भ्रष्टाचार पर लगाम नहीं है। युवाओं में तिकड़म है, निठल्लापन है। कृषि संकटग्रस्त है। कुल मिलाकर सब पस्त है। एक गहन अंधकार का वातावरण है। शायद ही कहीं थोड़ी उम्मीद और बेहतरी है। जैसा कि 'रात के पार चलो' शीर्षक कहानी में है। किसान से लेकर आदिवासियों की जमीन लूटने, हड़पने, हथियाने, कब्जियाने की अनेक कहानियों के बीच एक सरकारी संस्था के द्वारा जमीन विकास के लिए अधिगृहीत करने की एक समावेशी एवं संरक्षणपूर्ण व्यवस्था का जिक्र इस कहानी में है। इनके अतिरिक्त शायद ही कहीं उम्मीद के छोटे-अंतोमुख दिए टिमटिमाते हैं। जैसे 'फीमेल आईडी' में परिवार की महिलाएँ पुरुष वर्चस्व का सुशुप्त प्रतिरोध करती हैं। बनर्जी साहब ने बटन के प्रेम विवाह करने के कारण बटन से सम्बन्ध तोड़ लिया। परिवार की महिलाएँ दबे-छुपे संवाद बनाए हुए हैं। प्रेम कहानी 'रसपिरिया पर बज्जर गिरे' फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'रसप्रिया' का पुनर्लेखन है। इस कहानी में शुभ है कि मिरदंगिया की अंतिम घड़ी में रमपतिया कसम तोड़ बदहवास दौड़ते हुए उसके पास आती है। इस तरह यहाँ प्रेम की जीत होती है। कहानी का अंत ट्रेजिक होते हुए भी एक उम्मीद देता है। यह उम्मीद है कि 'रसप्रिया' से 'रसपिरिया पर बज्जर गिरे' पहुँचने पर जाति की दीवार शिथिल हो रही है। एक जरा सी उम्मीद 'द इवेंट मैनेजर' भी छोड़ती है। कहानी में तिलोत्तमा इवेंट मैनेजिंग के काम को जिस हौंसले के साथ संभालती है उसमें आज के दौर की लड़कियों के हौसले की झलक मिलती है। ऐसी लड़कियाँ जो कम से कम अपने स्तर पर दोयम नहीं हैं। तिलोत्तमा का चरित्र इस दृष्टि से काबिले तारीफ है कि वह अपने प्रेमी मोटका की तरह खुद को साबित करने के कम पतन से परहेज न करने वाला मार्ग नहीं चुनती। इन दोनों स्त्री चरित्र का महत्त्व इसलिए है कि प्रायः पंकज मित्र की कहानियों में स्त्रियों की अलग से रेखांकित करने योग्य सशक्त भूमिका कम है। उम्मीद की छोटी-सी किरण 'बिजुरी महतो की अजब दास्तान' में भी है। कहानी में कौलेश्वर समाज के हक-हकूक के लिए परिवर्तनकारी, जुझारू एवं नवोन्मेषकारी चेतना के साथ उभरता है लेकिन दुखद है कि उसे पर्याप्त समर्थन नहीं मिलता और सत्ता एवं पूँजीपतियों का गठजोड़ सफल हो जाता है। पंकज मित्र अपनी कहानियों में उन परिस्थितियों को सामने लाते हैं जिसने आम आदमी के जीवन को कलह, फूट, विघटन, बेकारी, बेचारगी एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़ता जैसी परिस्थितियों से जकड़ दिया है। उनका रुझान हमेशा परिदृश्य पर मौजूद परिस्थितियों से जूझ रहे लोगों के पक्ष में है, लेकिन कभी उन्होंने झूठा सपना नहीं दिखाया। यथार्थ जैसा है उसे वैसा ही रखा है। इस मायने में उनकी कहानियाँ देश-समाज-परिवार की विद्रूपता एवं टूटन का आख्यान है। रचनात्मक स्तर पर इन तिक्तताओं को बर्दाश्त लायक बनाने के लिए वे खिलंदड़ेपन का प्रयोग करते हैं इसीलिए शायद उनकी कहानियों में खिलंदड़ेपन की घनीभूत स्थिति है। इसे हम-आप उनकी कहानियों के शीर्षक से ही महसूस करने लगते हैं--'हुडुकलुल्लु', 'बेला का भू', 'पप्पू कांट लव सा....', 'लकड़सुंघा', 'मनेकि लबरा नाई की दास्तान' आदि।

पंकज मित्र की मुख्य कथा-भूमि (लोकेल) कस्बा है। एक समय में कमलेश्वर को 'कस्बे का कथाकार' कहा गया था। लेकिन पंकज मित्र 'कसबे का किस्सागो' संज्ञा के वास्तविक एवं सकारात्मक हकदार हैं। उन्होंने ज्यादातर कहानियाँ जिस लोकेल में लिखी हैं वह कस्बा है। लोकेल की दृष्टि से कस्बे की स्थिति मध्यवर्ग सरीखी होती है। गाँवों की यथा-सकारात्मकता से विछिन्न एवं शहरों की यथा-विरूपताओं से लैस। सामाजिक सम्बन्ध दड़का हुआ, अपरिचय, अकेलापन, चकाचौंध, आर्थिक-सांस्कृतिक रूपों की

नकल्ची प्रवृत्ति। पंकज मित्र की कहानियों में आप इसे बार-बार पाएँगे। गाँव जैसा न कृषक समाज है और न यहाँ अवसरों की प्रचुरता है। 'क्विजमास्टर' कहानी को ही लीजिए। यहाँ एक पढ़ा-लिखा युवा है जिसे अनुकूल अवसर नहीं मिलता। 'मंगरा मॉल' कहानी को देखिए नया आर्थिक मॉडल गाँव में घुसकर कृषक समाज को विनष्ट कर रहा है। 'द इवेंट मैनेजर' कहानी यह दर्शाता है कि कस्बा किस प्रकार शहर बनने को लालायित है।

वैसे तो पंकज मित्र की कहानियों में भी वय के लोग हैं। उनकी जीवन स्थितियाँ हैं। उनके संघर्ष हैं, छल-छद्‌म हैं। लेकिन युवाओं की उपस्थिति सबसे ज्यादा है। युवाओं को लेकर पंकज मित्र किसी यूटोपिया की स्थिति में नहीं हैं। बल्कि कहा जा सकता है कि यहाँ जो युवा है वह निराश करनेवाला है। समझौतावादी है। अगर वह लुम्पेन नहीं भी है तो बस उससे एक कदम दूर है। उसका कार्य, जीवन-शैली, विवेक क्षमता सबकुछ पेंडुलम की तरह डवाँडोल है। कई बार दूसरी स्थिति भी है कि वह कुछ कदम तक सकारात्मक है और फिर या तो ठिठक गया है या फिर उसे बलात् रोक दिया गया है। फिर वह खुद को हास्यास्पद बना रहा है या शोहदेपन की ओर बढ़ रहा है। ऊपर 'बिजुरी महतो की अजब दास्तान' की चर्चा की गई है। उसमें परिवर्तनकारी चेतना है। वह बिजली की कम्पनी को अपना खेत नहीं देना चाहता। सहकारी प्रयास से बिजली बनाना चाहता है। यहाँ तक तो ठीक है। लेकिन यह सब आधी-अधूरी तैयारी से करना चाहता है। वह जो चाहता है उसमें रोमान है। बिजली के काम करने में उसे सिद्धहस्तता है इससे वह ज्यादा ही संतुष्टि में आ गया है। समाज को उसने संगठित नहीं किया। यही कारण है कि वह सफल नहीं होता। और अंततः हास्यास्पद बन जाता है। ''तकरीबन एक महीने के बाद कौलेश्वर जब गाँव आया तो लोगों ने उसे पहचाना ही नहीं....हर बिजली के खंभे को हाथ से छूता, फिर आसमान की तरफ देखता।....दिनभर ट्रांसफार्मर की छाँह तले बैठा रहता।'' इसी तरह 'हुडुकलुल्लु' कहानी में मन्नू उछलता-गोते खाता चरित्र है। वैसे तो यह कहानी आपातकाल से हाल तक के सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन एवं पतन की दास्तान है। लेकिन यहाँ भी शंभू या मन्नू जैसे युवा से उम्मीद नहीं बँधती। शंभू तो डार्क चरित्र है तमाम तरह के दुष्कार्यों में लगा है। पर मन्नू जो 'लुंआठी', समाचार-पत्र को सांप्रदायिकता की आग में नहीं झोंकता। कल्याणी जी को एस.पी. के यहाँ गलत कारणों से आया देख वहाँ जाना छोड़ देता है। लेकिन फिर वही मन्नू प्रमोद खबरची के स्टाइल में पैसे की उगाही करता है। एक दिन महाकाल बन बैठता है। ऊल-जलूल हरकत करता है। मन्नू के व्यक्तित्व में शंभू की तरह स्वाभाविक रूप से मौजूद आपराधिक वृत्ति या कलुष न था पर समय एवं समाज के थपेड़े ने उसे हास्यास्पद बना दिया। 'हुडुकलुल्लु' एक ऐसी कहानी है जो दिखाती है मध्यवर्गीय-निम्नवर्गीय युवा किस प्रकार अवसरहीनता के कारण दिशाहीन हो रहा है। इसी दिशाहीनता का एक दूसरा रूप 'पप्पू कांट लव सा...' में दिखाई देता है। एक छात्र को सही अवसर प्राप्त नहीं होता है तो कैसे वह धीरे-धीरे शोहदेपन की ओर चला जाता है। कसाई टोले का पप्पू अच्छे अंक के बावजूद इंजीनियरिंग कालेज में दाखिला नहीं ले पता क्योंकि अभिभावक आर्थिक रूप से असमर्थ हैं। शोहदों से भरे समाज में और विवेकहीन प्रेम में डूबा वेलेंटाइन डे के दिन गुंडा तत्त्वों द्वारा पीट दिया जाता है। पप्पू की जो ट्रेजेडी है वह समाज और भौतिक परिस्थिति के कारण भी है लेकिन यह शिक्षा-व्यवस्था की खामी भी है कि एक छात्र सही दिशा नहीं पा सका। दरअसल पंकज मित्र की कहानियों में युवा सब तरह की सामाजिक-राजनीतिक-आर्थिक विरूपताओं का शिकार है। 'जिद्दी रेडियो' में वह नई आर्थिक व्यवस्था में दानवी रूप ले चुका ऋण-व्यवस्था का शिकार है। कहानी में स्वप्नमय बाबू का लड़का पहले तो बैंक के ऋण वसूली के काम में लगता है फिर आगे बढ़कर ट्रक लूटने के काम में। युवा की बाजार की घटनाओं का शिकार 'बे ला का भू' में भी हो रहा है। इस कहानी में बेचूलाल 'भोर एंड भोर इन्वेस्टमेंट' कंपनी का एजेंट बनकर समाज को झूठे सपने दिखता है। एक दिन कंपनी चंपत हो जाती है और लोगों के गुस्से, तकादे का

शिकार बेचूलाल होता है। स्थिति यह हो जाती है कि बेचूलाल छुपकर रहने लगता है। अपनी स्थिति भूत की घोषित करवा देता है। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि शिकार हमेशा विकल्पहीन युवा बनते हैं। इस व्यवस्था में ऊपर के पायदान पर मौजूद लोग अक्षुण्ण हैं। लोगों को झाँसे देने वाली कम्पनी के वास्तविक रूप प्रकट होने का समय आता है तो ओ.पी. सर जैसे लोग दूसरी जगह शिफ्ट हो जाते हैं। उनका कुछ नहीं बिगड़ता। व्यवस्था, परिस्थितियाँ युवाओं को छल रही हैं। समाज पर जिस तरह के मूल्य हावी हैं उनमें युवा भी लूट-खसोट, भोग-विलास का अनैतिक राह चुन रहे हैं। 'कस्बे की एक लोककथा बतर्ज बंटी और बबली' में बंटी और बबली नौकरशाही में पहुँचते हैं पर उनका ध्यान व्यवस्था को लूटने में है। दोनों के अंतर समाज के लिए वास्तव में कुछ सकारात्मक करने की इच्छा नहीं है। वे आदिवासी समाज के एक व्यक्ति का दुरुपयोग करते हैं, पैसा बनाते हैं एवं उसका एनकाउंटर कर देते हैं। इस तरह पतन की राह का चुनाव दोनों ओर से है। व्यवस्था वहाँ तक पहुँचा ही रही है, जो समर्थ हैं वे भी इस पर सरपट दौड़ रहे हैं। यद्यपि प्रतिरोध की कुछ स्थितियाँ हैं जैसे 'मंगरा मॉल' में रमेश अपनी जमीन के लिए अंत तक संघर्ष करता है। 'संदेश' में आदिवासी युवक तंग आकर उग्र प्रतिरोध की ओर अग्रसर हो जाता है। लेकिन कुल मिलाकर पंकज मित्र कस्बे के उन युवाओं की स्थितियों को अभिव्यक्त करते हैं जो कि दिशाहीनता एवं समझौतावाद जैसी परिस्थितियों के बीच है। इनमें से कुछ रुझान, जैसे कि 'जिद्दी रेडियो' की परिस्थिति, नया है, जबकि 'बिलौती महतो की उधार फिकिर' में जो युवा का रुझान है उसकी किंचित उपस्थिति पहले भी रही है अब और घनीभूत हुई है। कहानी के युवा में नेतागिरी की चसक लगी है। उसे मोटरसाईकिल चाहिए। बिरजू बाप के एटीएम का सारा पैसा उड़ाकर मोटरसाईकिल ले लेता है। दुर्भाग्यवश दुर्घटना का शिकार होता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। नई तकनीक ने जीवन को सरल बनाया है तो इसने धोखे, अनियंत्रित आकांक्षाओं को भी जन्म दिया है। इसने मूल्य व्यवस्था को भी बदल दिया है। बिरजू का मूल्य और उसके पिता बिलौती महतो के मूल्य में बहुत बड़ा अंतर आ गया है। बिलौती महतो परंपरागत किसानी मूल्य के हैं। संयम, कतर-ब्यौंत वाले कंजूस। बिरजू को घर फूँक तमाशा देखने से गुरेज नहीं है। यह सब कस्बाई स्तर पर घट रहा है। ग्रामीण चेतना का पारंपरिक रूप बिलौती में है। बिरजू भोग-बिलास के लिए लालायित है। 'बोनसाई' में युवा एक अलग ढंग की समस्या से दो-चार है। घर में पिता का निषेधपूर्ण व्यवहार उसे बोनसाई बना रहा है तो जब वह कार्यक्षेत्र में आता है पर्यावरण के लिए काम करने वाले ईमान साहब का व्यक्तित्व उसे खुद के बोनसाई होने का अहसास करा देता है। ईमान साहब के पर्यावरण के लिए अध्ययन-आंदोलन जैसा काम बड़ा रुतबा प्रदान करता है। लेकिन वास्तव में वे समझौतावादी एवं बिकाऊ हैं। अंततः वे निहित स्वार्थ वाले तत्त्वों के साथ समझौता कर लेते हैं, चिह्न लगा रह जाता है। 'क्विजमास्टर' के किंचित आत्ममुग्ध, 'अपेंडिसाइटिस' का जातिवादी अहं में डूबा, 'बोनसाई' का ठगा गया, 'जिद्दी रेडियो' का अपराध तक पहुँच गया, 'बेला का भू' का बाजार की घटनाओं का शिकार--ये कुछ बानगी है। इनके अतिरिक्त युवाओं से सम्बद्ध और भी अनेक प्रश्न पंकज मित्र की कहानियों में अभिव्यक्त हुए हैं।

युवाओं की दुनिया के साथ परिवार एवं बाजार पंकज मित्र की कहानियों का प्रमुख क्षेत्र है। बाजार (भूमंडलीकरण) अपनी आक्रामकता के साथ है तो परिवार इसके दंश को झेलने को अभिशप्त। कुछेक जगह परिवार के साथ कुछ अलग ढंग की समस्या अथवा संकट को अभिव्यक्ति मिलती है। इसी तरह बाजारवाद का प्रभाव परिवार तक ही सीमित नहीं है। वह कृषि, प्रेम, लोकतांत्रिक संस्थान, बाल मनोविज्ञान, जीवन दृष्टि--इन सबको प्रभावित कर रहा है। 'आस' कहानी सामंती परिवार के विरोधाभास, संकीर्णता, षड्यंत्र को अभिव्यक्त करती है। 'कफ़न रिमिक्स' पर दूरारूढ़ बाजार का प्रभाव है। क्योंकि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था शहर आधारित व्यवस्था है। गाँव में बाप-बेटे जी. राम एवं एम.राम को काम नहीं मिलता। तो बाजारवादी व्यवस्था की यह स्थिति है यहाँ। लेकिन इस कहानी में दूसरी मुख्य